•अध्ययन सामग्री.....

बच्चों में मूल्यबोध एवं शिक्षण प्रक्रया। (उच्च प्राथमक गणत व वज्ञान)

जब हम कसी बच्चे के बचपन से लेकर बड़े होने की पूरी प्रक्रया पर दृष्टि डालते हैं तो यह दृष्टिगत होता है क उसके वकास के क्रम में सबसे महत्वपूर्ण भूमका शिक्षा की होती है। चाहे वह शिक्षा औपचारिक हो अथवा अनौपचारिक। शिक्षा एक समग्र शब्द है ,उसमें सब कुछ समाहित है। हमने अपनी सुवधा के लए वद्यालयी शिक्षा में अलग-अलग वषय बनाए हैं ताक हम उन सभी वषयों से संबंधत ज्ञान उन्हें दे पाए और उनके संप्राप्ति स्तर को जांच पायें।

आज शिक्षा को बहुत ही संकुचत अर्थ में देखा जाने लगा है ।सामान्यतः यह समझा जाता है क इससे हमें वस्तुगत ज्ञान प्राप्त होता है, जिसके बल पर कोई रोजगार प्राप्त कया जा सकता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा पूरी तरह से रोजगार परक हो गई है, ऐसी दशा में शिक्षत व्यक्ति समाज में एक पद तो प्राप्त कर सकता है ,आर्थक रूप से मजबूत और समृद्ध भी बन सकता है ,परंतु कहीं ना कहीं उसका नैतिक पतन हो रहा है ।यही कारण है क उच्च स्तरीय तकनीकी -परक शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद समाज में असामाजिकता , चोरी, छिनैती, भय-दोहन ,भ्रष्टाचार, शोषण, नशाखोरी ,अवसाद ,आत्महत्या एवं हत्या जैसे दुष्कार्य दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं।आज के समय की सबसे बड़ी मांग है समाज की इस तस्वीर को बदलना।

पृथ्वी पर जीवन के प्रारंभ से लेकर जीवन के अंत के मध्य जो कुछ भी घटित होता है वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वज्ञान ही है।

हम जो भी ज्ञान एक बच्चे को देते हैं, वह उसे अपनी इंद्रियों से ग्रहण करके मस्तिष्क में संकलत करता है। ज्ञान प्राप्ति की पहली पायदान से लेकर अंतिम पायदान तक वह वज्ञान के ही द्वारा ज्ञान अर्जित करता है। कोई भी वषय हो ,वज्ञान उसमें समाहित है। इसी प्रकार हम वज्ञान के हर प्रकरण प्रसंग या वषय को पढ़ाते समय बच्चे के अंदर मूल्यों का वकास व संवर्धन कर सकते हैं।

वज्ञान और तकनीकी को जिम्मेदारी और नैतिकता के साथ प्रयोग में लाने के लए यह हम सभी ,वशेष तौर पर शिक्षकों की महती जिम्मेदारी है क प्राथमक व उच्च प्राथमक कक्षाओं से ही हम वज्ञान व गणत को वषय के तौर पर पढ़ाते समय बहुत ही सतर्कता और निपुणता के साथ इसमें नैतिकता व मूल्य बोध का पुट भी डालें ताक आगे चलकर बच्चे सर्फ वषय परक ज्ञान का भंडार न बन कर एक जिम्मेदार ,नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत ज्ञानी मनुष्य बनें।

•शिक्षक कक्षा में विज्ञान शिक्षण करते हुए मूल्यों का विकास कैसे करेंगे-

- बच्चों में मौजूद ववधता

के प्रति सजग होकर आसान से कठिन की तरफ बढ़ने वाली अधगम प्रक्रया को चुनेंगे।

- ऐसी व्यापक श्रेणी की शिक्षण वधयों का प्रयोग करें क सभी बच्चों का ध्यान कक्षा में लगा रहे।
- बच्चों के सामने कुछ ऐसी समस्याएं रखी जाए जहां एक से अधक हल ढूंढे जा सके फर बच्चे उन सभी हलों पर अपने-अपने तर्क रख कर सबसे सटीक हल पर सहमति बनाए।
- अधगम स्तर जांचने हेतु गतिवधयों का चुनाव करते समय सतर्कता से उन्हीं गतिवधयों का चयन करें जो जीवन कौशल और वास्तवक परिस्थितियों से जुड़ी हों।
- अधगम स्तर या सीखे गए कौशलों को जांचने के लए ऐसी क्रयाएं कराएं जिनसे वैज्ञानिक सोच और समझ को बढ़ावा मले।
- गृह कार्य भी इसी प्रकार से बनाने का प्रयास करें क बच्चे की मौलक सोच और वैज्ञानिक वचारधारा को बल मले।
- कक्षा शिक्षण में ऐसी वैज्ञानिक वधयों को अपनाया जाए जो अधगम के सभी प्रकार को समाहित करें।
- समस्याओं के समाधान पर केंद्रित दृष्टिकोण हो।
- ऐसी अधगम प्रक्रयाओं को अपनाया जाए जिनमें व्यापक तौर पर प्रयोगों, निष्कर्ष निकालने ,मूल्यांकन कार्य करने और निर्णय लेने को अपनाया जाए।
- अधगम की ऐसी सक्रय प्रक्रया का प्रयोग हो जिसमें व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों पहलुओं पर बातचीत हो,तथा इसके फलस्वरूप बच्चा जिम्मेदार बने।

वज्ञान की कक्षा को सांस्कृतिक ज्ञान क्षेत्र की तरह दिखना चाहिए जिसमें छात्र अपने आसपास की परिस्थितियों और प्रकृति में मौजूद चीजों और तथ्यों की छानबीन करके शिक्षक की सहायता से नए निष्कर्षों पर पहुंचता है।
इस प्रक्रया में वह अनेक अनुभवों से गुजरता है, यही अनुभव उसके अंदर मूल्यों का वकास करते हैं।

वज्ञान की पुस्तकों में दिए गए वषयों को पढ़ाते समय मूल्यों का वकास :

- **1- पर्यावरण:**

पर्यावरण पर चर्चा करते समय बच्चों को पर्यावरण के सभी घटकों की जानकारी देंगे ।पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता वकसत करेंगे। प्राकृतिक संपदाओं के वषय में जानकारी देते समय, इन संपदाओं के आवश्यकता से ज्यादा दोहन से होने वाले खतरों के प्रति सचेत करेंगे। ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के वषय में भी जानकारी देंगे, इससे बच्चों में पर्यावरण से जुड़ाव व उसके संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी का बोध वकसत होगा।

- 2- स्वच्छता

बच्चों से स्वयं की स्वच्छता ,उनके घर की स्वच्छता ,आसपास की स्वच्छता, तथा वद्यालय की स्वच्छता में उनकी भूमका पर वस्तार से चर्चा करें ।रोज बच्चों को साफ सुथरा बनकर आने के लए प्रेरित करें । बच्चों से

शौचालय के प्रयोग तथा बार बार साबुन से हाथ धोने के महत्व पर भी चर्चा करें ।ऐसा करने से बच्चे अपने जीवन में स्वच्छता के महत्व को समझेंगे और स्वच्छता को अपनाएंगे।

- **3 -** प्रदूषण

प्रदूषण पर चर्चा करते समय वायु ,जल ,ध्वनि और मृदा प्रदूषण पर चर्चा करेंगे। हमारे जीवन में स्वच्छ वायु और स्वच्छ जल का क्या महत्व है इस पर भी चर्चा करेंगे ।पृथ्वी पर जीवन के लए पेड़ों की आवश्यकता ,जीव -जंतुओं के लए पेड़ों का क्या महत्व है इस पर भी चर्चा करेंगे ।वृक्षारोपण ,वन संरक्षण का महत्व, प्रदूषण स्तर कम करने में हमारा क्या योगदान हो सकता है यह जानकारी भी बच्चोंको देंगे। इससे छात्र जागरूक और जिम्मेदार बनेंगे।

- **4 -** जनसंख्या

जनसंख्या पर चर्चा करते समय जनसंख्या वस्फोट के वषय में वशेष तौर पर चर्चा करेंगे ।जनसंख्या वस्फोट के दुष्प्रभावों की चर्चा करने से बच्चों में जनसंख्या नियंत्रण के महत्व की समझ वकसत होगी ।

- **5 -** भोजन और स्वास्थ्य

भोजन और स्वास्थ्य पर चर्चा करते समय पौष्टिक भोजन के महत्व तथा कुपोषण से होने वाली बीमारियों के चर्चा करेंगे । संक्रमण से फैलने वाली बीमारियों पर भी चर्चा करें तथा वभन्न बीमारियों से बचाव के उपाय पर भी चर्चा करें ।इसके फल स्वरुप बच्चों में स्वस्थ खाने-पीने की आदतों का वकास होगा । वह संक्रमण से फैलने वाली बीमारियों से बचने में ज्यादा सक्षम होंगे।

- **5 -** कंप्यूटर

कंप्यूटर और मोबाइल के उपयोग की जानकारी के साथ-साथ आज के समय में इनकी उपयोगता और जीवन के हर क्षेत्र में इनकी प्रासंगकता के वषय में बच्चों को बताएंगे । इनके आवश्यकता से ज्यादा उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों के वषय में भी जानकारी देंगे, इससे बच्चों में जिज्ञासा और उत्सुकता के साथ- साथ, कंप्यूटर ,मोबाइल का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली सावधानियों के प्रति जागरूकता आएगी।

- -वज्ञान के शक्षण से बच्चों में नवीनता और मौलकता के प्रति रुच पैदा होगी ।
- -अध्ययन के वषयों के लए उत्साह व आश्चर्य पैदा होगा।
- -व्यक्तिगत निर्णय लेते समय भी उपयुक्त वैज्ञानिक नियमों और सद्धांतों का प्रयोग करेंगे।
- -बच्चों में जिज्ञासा, उत्सुकता और खोजी प्रवृत्त का वकास होगा।
- -बच्चों के सर्वांगीण वकास के लए उपयुक्त वातावरण मलेगा।
- -वभन्न सामाजिक -वैज्ञानिक मुद्दों के प्रति जागरूकता व संवेदनशीलता पैदा होगी।
- -मलजुलकर प्रोजेक्ट कार्य, चार्ट व मॉडल बनाने से टीम भावना व भाईचारा बढ़ेगा।

गणत शक्षण से मूल्यों में वकास_

गणत को हम उस वज्ञान के रूप में समझकर व्यक्त कर सकते हैं जिसका संबंध आकार मात्रा और व्यवस्था के तर्क से होता है गणत हमारे हर तरफ होती है और हम जो कुछ भी करते हैं वह प्रत्येक चीज कहीं ना कहीं कसी न कसी प्रकार से गणत से जुड़ी होती है जैसे हम खेलते हैं तो कतने रन चाहिए कतने से हम जीतेंगे वद्यालय में प्रार्थना कतने बजे प्रारंभ होगी आज कक्षा में कतने छात्र आए हैं आदि हमारी प्रतीक्षत कसी न कसी प्रकार से गणत से जुड़ी है।

- गणत हमारे जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है।
- गणत तार्कक वचारों का वज्ञान है।
- गणत हमारे दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में सहायक होती है।
- गणत अमूर्त अवधारणाओं को समझने में सबसे अधक सहायक है।
- गणत शक्षण में मनुष्य की उच्चतम स्तर की संज्ञानात्मक शक्तियों का समावेश होता है।
- गणत ध्यान केंद्रित करने में सहायक है।
- गणत छात्रों में तर्कशक्ति सोचने की क्षमता सच्चाई ग्रहण शीलता वधैर्य वकसत करता है

- गणत से छात्रों में अनुशासन व क्रमबद्धता के गुणों का वकास होता है।
- गणत सरल से कठिन की ओर ले जाता है।
- गणत में सटीकता ,सत्यता ,और कठिन परिश्रम पर जोर दिया जाता है।
- गणत का हमारी सांस्कृतिक उनमें बहुमूल्य योगदान है ।नृत्य ,कला ,गायन व कवता सभी क्षेत्रों में गणत की समझ अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- गणत शक्षण से छात्रों के चरित्र में ईमानदारी ,न्याय, धैर्य, सादगी और उपलब्ध सामग्री को आपस में बांटकर प्रयोग करने के मूल्यों का वकास होता है।
- छात्रों द्वारा गणत की सहायता से सामाजिक संरचना व सामाजिक व्यवस्थाओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।
- गणत शक्षण से छात्रों में कल्पना शक्ति ,स्मरण शक्ति ,मौलकता, तर्क शक्ति व रचनात्मकता का वकास होता है।
- गणत के सद्धांत हर परिवेश, परिस्थिति में एक समान ही रहते हैं। भाषा ,क्षेत्र या स्थान का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- गणत के क्षेत्र में कसी समुदाय, वर्ग या क्षेत्र का वर्चस्व नहीं है। यह भाईचारे और शांति का संदेश देता है।

एक शक्षक के तौर पर मेरा वचार यह है क छात्र नई जानकारी के शोधकर्ता और निर्माता हो सकते हैं और गणत के माध्यम से नए ज्ञान का उत्पादन और संचार कर सकते है। उनके निष्कर्ष कक्षा ,स्कूल ,समुदाय ,समाज या पूरे वश्व के ज्ञान के आधार में योगदान कर सकते हैं। उनके निष्कर्ष और उससे जुड़े मूल्य उनके स्कूल या उनकी दुनिया को बहुत ही सकारात्मक तरीके से प्रभावत कर सकते हैं।

दीप्ति मश्रा

सारनाथ, वाराणसी

JBTC Campus, Nishatganj, Lucknow | 0522-2780385, 2780505 | www.scert-up.in | dscertup@gmail.com | SCERT UP | SCERT UP | SCERT UP